



RISHI VISHWAMITRA VIDYA FOUNDATION

Presented by Acharya Kapil | Contact: 8756390767

वेदों में अन्तरिक्ष और जीवन के मार्ग

ऋग्वेद १.३५.११

ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे ।
तेभिर्नो अद्य पृथिभिः सुगेभी रक्षां च नो अधि च ब्रूहि देव ॥११॥

पदपाठः

ये । ते । पन्थाः । सवितुर् (इति) । पूर्व्यासः । अरेणवः । सुकृताः । अन्तरिक्षे ।
तेभिः । नः । अद्य । पृथिभिः । सुगेभिः । रक्षां । च । नः । अधि । च । ब्रूहि । देव ॥



शब्दार्थ (Word Meaning)

विद्वानों (आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द) के भाष्यों के आधार पर शब्दों के अर्थ:

पद	अर्थ
ये	जो (वक्ष्यमाण)।
ते	आपके।
पन्थाः	मार्ग / धर्ममार्ग (Paths/Orbits)।
सवितः	हे सवितृदेव! / हे सकल जगत् को उत्पन्न करने वाले ईश्वर!
पूर्व्यासः	प्राचीन, पूर्वसिद्ध / पूर्वजों द्वारा साधे गए व सेवित।
अरेणवः	धूलि-रहित / विघ्न-रहित (Frictionless / Obstacle-free)।
सुकृताः	उत्तम प्रकार से निर्मित (Well-constructed)।

अन्तरिक्षे	अन्तरिक्ष में / अपनी व्याप्ति-रूप इस ब्रह्माण्ड में।
तेभिः	उन।
नः (अस्मान्)	हमारी / हमें।
अद्य	आज (इस दिन)।
पथिभिः	मार्गों से।
सुगेभिः	सुखपूर्वक चलने योग्य सुगम मार्गों से।
रक्ष	रक्षा करें / पालन करें।
च	और।
अधि ब्रूहि	देवों के समक्ष हमारी श्रेष्ठता का कथन करें / हमें उत्तम विद्याओं का उपदेश दें।
देव	हे देव! (सर्वसुखप्रदाता ईश्वर)।

आचार्यों के अनुसार अनुवाद एवं भावार्थ

१. आचार्य सायण के अनुसार (पौराणिक/आधिदैविक अर्थ):

"हे सवितृदेव (सूर्यदेव)! अन्तरिक्ष में आपके जो सनातन (पूर्वसिद्ध), धूलि-रहित (स्वच्छ) और उत्तम प्रकार से निर्मित मार्ग हैं। उन सुगमता से चलने योग्य मार्गों द्वारा आकर आज आप हमारी रक्षा करें, और देवों के समक्ष हमारे पक्ष में बोलें (अर्थात् हमारी श्रेष्ठता का प्रतिपादन करें)।"

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार (आध्यात्मिक/यौगिक अर्थ):

"हे सकल जगत् के उत्पादक, सर्वसुखप्रदाता परमेश्वर! आपके व्याप्तिरूप इस अनन्त ब्रह्माण्ड (अन्तरिक्ष) में जो आपके द्वारा निर्मित विघ्नरहित (धूलि आदि दोषों से रहित), उत्तम और पूर्वजों द्वारा सेवित धर्ममार्ग हैं; उन सुखदायक सुगम मार्गों से आज आप हमारी रक्षा करें और हमें उत्तम विद्याओं का उपदेश दें।"



वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

यह मन्त्र वैदिक ऋषियों के खगोलीय (Astronomical) ज्ञान और ब्रह्माण्डीय नियमों (Cosmic Order) का एक अद्भुत उदाहरण है:

- **'अन्तरिक्षे पन्थाः' (Orbital Paths in Space):** मन्त्र स्पष्ट रूप से अन्तरिक्ष (Space) में मार्गों (पन्थाः) की बात कर रहा है। आधुनिक खगोल विज्ञान के अनुसार, सूर्य और अन्य खगोलीय पिण्ड अन्तरिक्ष में अपने निश्चित पथ (Orbits/Trajectories) पर गति करते हैं।
- **'अरेणवः' (Frictionless / Dust-free Orbits):** 'अरेणवः' का शाब्दिक अर्थ है 'बिना धूल का'। विज्ञान सिद्ध करता है कि अन्तरिक्ष (Space) एक 'Vacuum' (निर्वात) के समान है, जहाँ पृथ्वी के वायुमंडल की तरह घर्षण (Friction) या धूल का प्रतिरोध नहीं होता। ग्रह और तारे बिना किसी घर्षण के अपने पथ पर चलते हैं।
- **'सुकृताः' (Perfectly Constructed/Balanced):** खगोलीय पिण्डों की कक्षाएँ गुरुत्वाकर्षण (Gravity) और गति के सटीक संतुलन से बनी हैं, जिसे वेदों में 'ऋत' (सत्य/ब्रह्माण्डीय नियम) कहा गया है। यह परमेश्वर की 'सुकृत' (उत्तम) रचना है।
- **आध्यात्मिक विज्ञान (Spiritual Science):** जैसे सूर्य अपने निर्धारित निर्बाध पथ पर चलकर पूरे सौरमंडल को जीवन देता है, वैसे ही मनुष्य को प्रकृति के नियमों (धर्ममार्ग) पर चलना चाहिए। यह मार्ग विघ्न-रहित (अरेणवः) और सुगम (सुगेभिः) होता है, जो अंततः रक्षा और उच्च ज्ञान (अधि ब्रूहि) की ओर ले जाता है।



व्याकरण तथा पद-सिद्धि (Grammar Derivation)

पाणिनीय अष्टाध्यायी के अनुसार मन्त्र के विशिष्ट पदों की सिद्धि:

- **पन्थाः:** यहाँ 'सुपां सुलुक्' (७.१.३९) सूत्र से प्रथमा बहुवचन 'जस्' के स्थान पर 'सु' आदेश हुआ है। 'पथिमथोः सर्वनामस्थाने' से आद्युदात्त स्वर है।
- **पूर्व्यासः:** 'पूर्वैः कृतम्' इस अर्थ में 'पूर्वैः कृतमिनि यौ च' (४.४.१३३) सूत्र से पूर्व शब्द से 'य' प्रत्यय हुआ है। 'आज्जसेरसुक्' (७.१.५०) सूत्र से जस् को 'असुक्' (आस्) आगम होकर यह वैदिक रूप सिद्ध होता है।
- **अरेणवः:** अविद्यमानाः रेणवो येषु (बहुव्रीहि / नञ् तत्पुरुष)। 'नञ्सुभ्याम्' (६.२.१७२) सूत्र से उत्तरपद के अन्त में उदात्त स्वर है। 'ऋ गतौ' धातु से 'अत्रिव्रीहि' (उणादि ३.३७) से 'णु' प्रत्यय होकर रेणु शब्द बनता है।
- **सुकृताः:** सुष्ठु कृताः इति। कर्म अर्थ में 'क्त' प्रत्यय। 'गतिरनन्तरः' (६.२.४९) सूत्र से गति (सु) के कारण प्रकृति-स्वर रहता है।
- **सुगेभिः:** सुष्ठु गच्छन्ति एषु इति सुगाः। 'सुदुरोरधिकरणे' (३.२.४८ वार्तिक) से 'सु' उपपद रहते 'गम्' धातु से 'ड' प्रत्यय हुआ है। कृदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम् नियम लगा है।
- **रक्षः:** 'रक्ष पालने' लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन। 'द्व्यचोऽतस्तिडः' (६.३.१३५) सूत्र से संहिता (वेद-पाठ) में दीर्घ होकर 'रक्षा' रूप बना है।

Published by **Rishi Vishwamitra Vidya Foundation**
Compiled and Presented by **Acharya Kapil**
For inquiries, contact: +91 8756390767